ओ३म्
AUM

वेदाङ्ग

(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula .

APRIL- JUNE ISSUE 1998
NO. 17

संस्कार

पिछले अंक से आगे

चूड़ाकर्म या मुण्डन संस्कार

चूड़ाकर्म संस्कार आठवा संस्कार है। संस्कृत में चूड़ा-शब्द चोटी के लिए प्रयुक्त होता है। हिन्दी का 'जूड़ा' शब्द 'चूड़ा' का बिगड़ा रूप है।

चूड़ाकर्म का दातों के निकलने से सम्बन्ध है

चूड़ाकर्म के लिये सूत्र-ग्रन्थों ने दो समय दिये है - या तो जन्म के प्रथम वर्ष, या तीसरे वर्ष। प्रथम तथा तृतीय वर्ष का कारण यह है कि बच्चे के छह से सात महिने की आयु से दात निकलने शुरु हो जाते है जो दो और आधा से तीन वर्ष की आयु तक निकलते रहते है। बच्चे के दात दो बार निकलते है - पहले दूध के दात निकलते है,इनके टूटने के बाद स्थिर, पक्के दात निकलते है। दूध के दात बीस होते है, इन के बाद पक्के दात बत्तीस (३२) होते हैं। एक वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते आठ दात निकल आते है - चार ऊपर के, चार नीचे के। डेढ़ वर्ष के आयु में बारह दात, डेढ़ वर्ष से दो वर्ष की आयु में सोलह दात और दो से अढ़ाई-तीन वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते बीस दात निकल आते है। दात अन्तर देकर निकलते है। पहले नीचे के दात निकलते है। इन के निकलने के बाद प्रकृति ने आराम देने के

लिए अगले दात निकलने में विराम डाल दिया है ताकि शिशु को लगातार कष्ट न उठाना पड़े।

दात निकलते समय सिर भारी हो जाता है, गर्म रहता है, सिर में दर्द होता है, मसूड़े सूज जाते है, लार बहा करती है, दस्त लग जाते है, हरे-पीले पनीले भारी-भारी दस्त आते है बच्चा चिड़चिड़ा हो जाता है। दातों का भारी प्रभाव सिर पर पड़ता है, इसलिए सिर को हल्का तथा ठण्डा रखने के लिये सिर पर से बालों का बोझ उतार डालना ही चूड़ाकर्म-संस्कार का उद्देश्य है।

चूड़ाकर्म-संस्कार का मस्तिष्क के साथ सम्बन्ध

शरीर में वैसे तो सब अग अपने-अपने काम की दृष्टि से मुख्य है, परन्तु मस्तिष्क का सब से मुख्य स्थान है। मस्तिष्क दो भागों में बटा हुआ है - बृहत्-मस्तिष्क (Cerebrum) तथा लघु-मस्तिष्क (Cerebellum)। मस्तिष्क के ये दोनों भाग ज्ञान और क्रिया के केंद्र है। इसी से पाचो ज्ञान इन्द्रियों तथा पाँचों कर्म इन्द्रियों का सचालन होता है। यह सारी मशीनरी खोपड़ी के भीतर रहती है। मस्तिष्क को ढकनेवाली खोपड़ी के कई भाग हैं जो बचपन में ठीक प्रकार जुड़े नहीं होते। इन भागों को जुड़ने को अस्थि-सन्धि (हड्डियों का जुड़ना) कहते है। खोपड़ी की हड्डिया तीन साल से पहले नहीं जुड़ती, इसलिये गर्भ अवस्था में ही शिशु के सिर पर बाल होते है ताकि शिशु की खोपड़ी की वे रक्षा करते रहे, और खोपड़ी के भीतर का मस्तिष्क सुरक्षित रहे।

तीन साल के बाद खोपड़ी की हड्डिया जुड़ जाती है, इसलिये गर्भ अवस्था के बालों को निकाल देने का समय आ जाता है। गर्भ अवस्था के बालों को, जो अब तक खोपड़ी की, और खोपड़ी की रक्षा के द्वारा मस्तिष्क की रक्षा कर रहे थे उस्तरे से निकाल देने के निम्न कारण है :-

(१) मलिन बालों को निकाल देना - शिशु जब गर्भ में होता है तभी उस के बाल आ जाते है और वे मलिन जल में रहते है। इन मलिन बालों को उस्तरे से साफ कर देना आवश्यक है। इसी कारण मुण्डन किया जाता है। इन बालों का तभी तक रखना उचित है जब तक खोपड़ी की हड्डियाँ आपस में जुड़ नहीं जाती। क्योंकि तीसरे साल तक ये जुड़ जाती है, इसलिये इसके बाद इन मलिन बालों को रखने में कोई लाभ नहीं।

(२) सिर की खुजली आदि से रक्षा - सिर पर बाल बने रहने से

बच्चे के सिर में खुजली, जूएँ आदि अनेक रोग हो जाते है। इन रोगों से बच्चे को बचाये रखने के लिये भी बाल निकाल देना उचित है। इन बालों के निकल जाने से बच्चे के सिर की सफाई अच्छी तरह से हो सकती है

(३) सिर के भारी होने आदि से रक्षा - बालों के कारण सिर भारी रहता है जिससे बच्चे को सिर में दर्द, गर्मी आदि सताते है। इस कारण से भी सिर से बाल उतार देना उचित है।

(४) नये बाल आने में सहायक है - बाल जितने कटते है उतने ही नये पुष्ट बाल आते है। सिर पर उस्तरा दो-तीन बार फिर जाये तो बालों की जड़े मजबूत हो जाती है और नये बाल लम्बे तथा मजबूत होने में सहायता मिलती है।

मुण्डन करने की विधि

इस संस्कार के लिये विशेष सामान :- दही, सिर पर मलने के लिये, कघा, कैंची तथा उस्तरा जिन्हे उबलते पानी में विशुद्ध करें, कुश-बाल पकड़ने के लिये, आटे का पेड़ा बाल उठाने के लिये, शिशु के स्नान के लिये गरम पानी, शिशु के वस्त्र तथा शिशु के लिये खिलौना।

यज्ञ वेदी पर पत्नी पति के दायीं तरफ बैठे और सन्तान माता की गोदी में या माता-पिता के बीच में बैठे। विशेष यज्ञ करने के बाद मुण्डन करे। सन्तान का पिता संस्कार विधि अनुसार अनेक क्रियाओं को करने के बाद पहले दाहिने ओर के बालों को कुश सहित चार जगह से कैंची से काटे। इसी तरह बाई ओर के बालों को चार जगह से काटे। उसके बाद आगे और पीछे के बालों को चार-चार जगह से कैंची से काटे।

इतना कार्य करने के बाद सन्तान का पिता नापित से कहे कि इस ठण्डा-गर्म जल से बच्चे का सिर अच्छे प्रकार कोमल हाथ से भिगो, सावधानी और कोमल हाथ से मुण्डन कर, कहीं छुरा न लगने पावे। जब मुण्डन हो चुके तब कटे बाल को आटे के पेड़ा से उठाकर जगल में लेजा गड्ढा खोद के सब डाल ऊपर से मिट्टी से दबा देवें। बाल को नदी आदि में न डाले, इस से जल मलिन होता है तथा रोग फैलने की सम्भावना रहती है। मुण्डन हए पश्चात् दही हाथ में लगा के शिर पर लगा के स्नान करा उत्तम वस्त्र पहिना सन्तान का पिता अपने पास ले शुभ आसन पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठे तथा सभी उपस्थित जन आशीर्वाद देवें कि तू सौ वर्ष तक दिनोंदिन शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक दिशा में बढ़ते जाकर जी।

अगला अंक कर्णवेध संस्कार